ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-166-169, YEAR JUNE 2016

हिंदी दलित साहित्य में नाटक – विशेष सन्दर्भ, नंगा, सत्य

❑ डॉ0 राजेश कुमारी

दलित साहित्य उन लोगो का साहित्य हैं जो वर्षो से भारतीय समाज व्यवस्था के कारण शोषित होता रहा हैं। इन शोषित पीड़ित लोगो की कथा व्यथा जो आज दलित विमर्श के रूप में हमारे सामने मुखरित हुई हैं। जिस तरह हिंदी दलित साहित्य में अन्य विधाएँ अपना स्थान रखती हैं उसी तरह नाटक विधा भी अपना विशेष स्थान रखते हुए आगे बढ़ी हैं। भले ही हिंदी में दलित नाटक कम लिखे गए हैं। लेकिन जितने भी लिखे गए हैं। वह बहुत महत्वपूर्ण हैं विधा दलित समाज के यथार्थ को उजागर करने एवं ब्राह्मणवादी समाज व्यवस्था के सच को उजागर करने में एक सफल विधा मानी जा सकती हैं। नाटक विधा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय नाट्य अकादमी के निदेशक देवेन्द्र राज अंकुर अपने विचार बताते हैं कि "भारतीय रंगमंच की शुरुआत के स्रोत के रूप में रामायण महाभारत जैसे जिन दो महाकाव्यों का सबसे बड़ा योगदान हैं उनके रचियता क्रमशः वाल्मीकि और व्यास दलित वर्ग से ही सम्बंधित थे अत इस तथ्य को अलग से रेखांकित करने की जरुरत नहीं कि बेशक उन्होंने अपने दोनों महाकाव्यों में समाज के उच्च एवं शासक वर्ग की जीवन गाथा का ही चित्रण किया हैं लेकिन तब भी ऐसे अनेक प्रसंग स्वयं इन दोनों रचनाओ में ही उपलब्ध हैं जिन्हें पूवर्ती रचनाओ ने अपनी आधार भूमि में रूप में ग्रहण किया। शबरी, केवट , जटायु , और बाद में राम की सेना में दीक्षित विभिन्न वर्ग और समुदायों के लोग। दूसरी तरफ एकलव्य घतोकच, हिडिंबा और बर्बरीक और यहाँ तक कि कर्ण जैसा महत्त्वपूर्ण चरित्र भी। ये सारे पात्र आदिकाल से लेकर आजतक साहित्य की अलग अलग विधाओं जैसे की उपन्यास , कहानी और निबंध का विषय बनते रहे हैं इसी क्रमं में हम भारतीय नाट्य साहित्य में प्राप्त और विवेचित , विश्लेषित दलित पर खुलकर चर्चा कर सकते हैं"1

हालांकि हिंदी में अनेक दलित लेखकों ने नाटक विधा पर अपनी कलम चलायी। किन्तु हिंदी दलित साहित्य का प्रथम नाटक होने का श्रेय श्री शिवप्रसन्न दास का (हरिजन) नाटक को दिया जाता हैं जिसका प्रकाशन सन (1959) में हुआ था। इस नाटक को यू तो एकांकी अभिनय का नाम दिया गया हैं लेकिन इसे देखने से पता चलता हैं कि यह दो,अंको का पूर्ण नाटक हैं, नाटको के सन्दर्भ में देखा जाए तो सबसे ज्यादा लेखन माता प्रसाद ने इस विधा पर किया हैं इनके अनेक नाटक हैं जैसे धर्म के नाम पर धोखा 1977 , अछूत का बेटा (1990), वीरांगना उदा देवी पासी (1999), प्रतिशोध (1999), धर्म परिवर्तन (2000) अंतहीन बेड़ियाँ, आदि नाटक हैं ये नाटक एक ऐसे वर्ग की जीवन कथा की सच्चाई को उजागर करते हैं जो हमेशा किसी ना किसी रूप में शोषित होता रहा हैं। इनके बाद हम देखते है कि अन्य लेखको ने भी कुछ कुछ नाटक लिखे जिनमे श्री एन. आर. सागर जिन्होंने दो नाटकों का सृजन किया हैं। जिसमें उनके अंतिम अवरोध, मार्ग का काँटा, हैं। दलित विमर्श के बहुचर्चित लेखक मोहनदास नैमिशराय ने भी नाटक लिखे हैं जिसमें उनका नाटक अदालतनामा, बहुत ही प्रसिद्ध नाटकों में एक हैं। "कर्मशील भारती का नाटक 'फांसी' रघुवीर सिंह अरविन्द का इतिहास की पहली घटना भी इस दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण नाटक हैं।2 डॉ एन. सिंह और मैंदोला द्वारा लिखित नाटक कठोती, में गंगा, संत रैदास को समाज सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया हैं "हिन्दू आन्दोलन के प्रणेता स्वामी अछूतानंद हरिहर

❑ सहायक प्राध्यापक. हिन्दी विभाग, कर्नाटक केन्द्रीय वि ववियालयए गुलबर्गा (कर्नाटक) भारत

जी के चार नाटक दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें से दो प्रभावित नहीं हो पाए है। उनका पहला नाटक रामराज्य न्याय, में रामायण के उपेक्षित और राम के जुल्म के शिकार प्राप्त शम्बूक की हत्या का वर्णन हैं। इस नाटक को लोग ने हजारों की संख्या में इकट्ठे होकर को देखा करते थे। जैसे – शम्बूक, मायानंद बलिदान, पारख पद, बलि ढलन आदि हिन्दू शास्त्रों और वाड्मय के ऐसे पात्रों पर रचे गए हैं।3 रत्न कुमार सांभरिया द्वारा लिखित नाटक 'समाज की नाक' का विवरण भी मिलता हैं। यह एकांकी 1988 में जयपुर के डॉ0 अम्बेडकर साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुआ है। कुल मिलाकर इसमें नो एकांकी हैं जैसे– छठी की रात, इक्कीसवी सदी के प्रेमी, प्रेषित पतिका, मनीला, माँ का आतंक, सुबह का भूला, पांच पराठे, एक मयान दो तलवार आदि नाटक दलित जीवन की समस्याओं को उजागर करते हैं। कथा साहित्य में विशेष स्थान रखने वाले दलित लेखक ओम प्रकाश वाल्मीकि ने भी कई नाटक लिखे हैं जिनमें उनके दो चेहरे, नाटक का मंचन कई नाट्य संस्थाओं ने किया है। सूरजपाल चौहान ने अपने नाटक 'सच कहने वाला शुद्र' हैं में शुद्र को शुद्ध एवं सत्य सिद्ध करते हुए तथाकथित ज्ञान के भण्डार से परिपूर्ण ब्राम्हणों को ठग का तार्किक अर्थ देकर सत्य को परिभाषित एवं बदलने में सफल हुआ है। "पिछले दिनों उत्तरांचल सांस्कृतिक शोध अभिनय नाट्य विद्यालय की प्रस्तुति, खल छल नीति, उत्तरांचल रंग महोत्सव में नगर प्रेक्षागृह में नाटककार रूप नारायण सोनकर का नवीनतम नाटक खल– छल नीति का सफल मंचन हुआ है। यह नाटक ग्रामीण जन जीवन पर आधारित है। आज भी गाँव के दबंग लोग निर्बलो पर अत्याचार करते हैं कमजोर व् बेसहारा नारियों का कई प्रकार से शोषण होता है इस नारी सशक्तिकरण के युग में भी यह नाटक नारियों को ऐसा औजार प्रदान करता है कि वे मुसीबत में भी अपनी रक्षा स्वयं कर सकती हैं" ।4 डॉ सुनील कुमार सुमन का नाटक 'एक बार फिर' व्यंग्य परक प्रतीकात्मक और दलित चेतना से संपन्न नाटक हैं। यह नाटक अम्बेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित वर्तमान राजनीतिक परिवेश की पड़ताल करते हुए दलित समाज पर मंडराने वाले संकट को उजागर करता हैं। महाराष्ट्र की जन्मभूमि ने कई ऐसे महानायकों को पैदा किया हैं। जो केवल महाराष्ट्र के ही मसीहा नहीं बने बल्कि सम्पूर्ण भारत के मसीहा रहे हैं जिनमे बौद्ध , बाबा साहेब डॉ आंबेडकर और ज्योतिबा फूले, सावित्री बाई फूले आदि जिन्होंने एक ऐसे वर्ग की पीड़ा को सुना और समझा ही नहीं बल्कि उनके अधिकारों के प्रति विद्रोह भी किया है। यह वर्ग हजारो वर्षो की यातना को अपने दिल में छुपाए बैठा रहा था यह यातनाए कहीं और से नहीं मिली बल्कि हमारी ही समाज व्यवस्था ने दी हैं। इन यातनाओं पीड़ाओं का विद्रोह करना सिखाया हैं तो वह हैं बाबा साहब अंबेडकर ज्योतिबा फूले, सावित्री बाई फूले जिनके विचारों से ये वर्ग प्रभावित हुआ। आज हम जिस विमर्श की बात करते हैं। विमर्श के सन्दर्भ में आने का कारण ही ये महा नायक रहे है। इन्ही महान विभूतियों की जन्म भूमि पर दलित लेखिका सुशीला टाकभोरे का भी जन्म हुआ। यह लेखिका मराठी भाषी होने के बावजूद भी हिंदी में उन्होंने अपनी कलम चलाई जिसमे कई विधाओं के सन्दर्भ में लिखने के साथ साथ नाटक विधा को अपनी कलम का माध्यम बनाया हैं। जिसमें इन्होंने 'रंग और व्यंग्य' नामक नाटक संग्रह भी निकाला और साथ ही नंगा सत्य नाटक को भी प्रस्तुत किया इस नाटक के सन्दर्भ में सुशीला जी पुस्तक की भूमिका में कहती हैं की "मेरा उद्देश्य नाटक लिखना नहीं था मे लिखना चाहती थी दलित शोषित जीवन की व्यथा कथा न जाने कैसे नाटक के प्रसंग चले आए है एक के बाद एक सिलसिला जुड़ता गया और आप सबके सामने 'नंगा सत्य' नाटक सामने आता है।"5 जैसा की नाटक के नाम से ही मन में यह आभास होने लगता हैं, की यह नाटक किसी न किसी की सच्चाई को उजागर करेगा यह नाटक ज्यादा बड़ा नहीं हैं, लेकिन एक ऐसे

समाज की सच्चाई को उजागर करता हैं जो हजारो वर्षो से दलित वर्ग का शोषण करता रहा हैं। सुशीला जी ने अपने पत्रों के माध्यम से गाँव के दलित पिछडो के सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, शोषण को सफल दिखाया हैं। और किस तरह सर्वहारा वर्ग इन शोषित पीड़ित को अपना शिकार बनाते हैं तथा किस तरह समाज में उनका वर्चस्व स्थापित होता हैं, जो इन दलित पीड़ित लोगों को आगे ही नहीं बढ़ने देता हैं। हमें इस नाटक में अनेक प्रसंग मिलते हैं जो सर्वहारा वर्ग की सच्चाई को उजागर करते हैं। कि किस तरह यह वर्ग दलितों को पीड़ित करता हैं। धनसिंह एवं सत्यजीत नामक पात्रों के माध्यम से बताया गया हैं।

"सत्यजीत . (विद्रूपता के साथ हंसता हैं फिर इधर उधर देखते हुए) आओ .. आओ मेरे प्यारे बेलो ..... आओ आओ आदमी बैलो की तरह हल में जूते हुए मंच पर आते हैं सत्यजीत उन्हें देखता हैं हँसता हैं फिर गुस्से को साथ उन पर कोड़े बरसता हैं। दोनों रोते कराहते हैं परदे के पीछे जाते हैं) अँधेरा होता हैं फिर प्रकाश मंच पर दो आदमी औरते सांकेतिक रूप में फसल कटते हैं)सत्यजीत . (गुस्से के साथ) जल्दी काम करो ...तेजी से काम करो . हराम का रुपया लेते हो .....बेईमानी ... (उन पर कोड़े बरसाता हैं, सब चीखते हैं इधर उधर भागते हैं, अन्धेरा फिर प्रकाश मंच पर एक आदमी झाड़ू टोकना लेकर आता हैं एक आदमी जूते चप्पल मरम्मत और पालिश का सामान लेकर आता है।

सत्यजीत . गुस्से के साथ देखते हुए भंगी चमारो ..... तुमने मंच पर आने की हिम्मत कैसे की ?जाओ गाँव के बाहर रहो .. हिन्दू महाजनों से दूर अपनी गन्दी बस्तियों में रहो .....यदि किसी ने कुछ ज्यादा चाहा तो मार डाले जाओगे ..... मार डाले जाओगे .

(उन्हें कोड़े से पीटता हैं दोनों चीखते हैं मंच पर गीर जाते हैं" ।6

इस प्रसंग से पता चलता हैं की किस तरह सर्वहारा वर्ग एक नीचे वर्ग को अपने पैरों की जूती समझता हैं। और बिना वजह शोषण करता हैं यह एक प्रसंग ही नहीं हैं बल्कि नाटक में कई प्रसंग ऐसे भी हैं जो इससे भी बदतर दलितों की स्थिति को दर्शाते हैं साथ ही सर्वहारा वर्ग किस तरह नीचे वर्ग को सूत पर पैसा देकर उसकी जमीन आदि को छीन लेता हैं, इसका भी चित्रण किया गया है।

इतना ही नहीं स्वर्ण समाज किस तरह दलित लोगों के नामों का उच्चारण करके उल्टा सीधा करते हैं इसको भी यह नाटक दर्शाता हैं। यह नाटक केवल दलितों की पीड़ा ही नहीं बल्कि दलितों में दलित कही जाने वाली दलित स्त्री के स्वाभिमान को भी दर्शाती हैं नकी किस तरह एक दलित स्त्री देह इज्जत को बचाने के लिए जान की बाजी लगा देती हैं। एक तरफ यह नाटक सर्वहारा वर्ग द्वारा शोषित पीडितों की कथा व्यक्त करता हैं तो दूसरी तरफ यह नाटक इस वर्ग से विद्रोह करने की चेतना को भी दर्शाता हैं जाति व्यवस्था एवं अंधविश्वास में रहने वाली इस गाँव की जनता को बहार निकलने भी सफल होता हैं इस व्यवस्था से निकलने का एकमात्र कारण डॉ अंबेडकर के विचारों का प्रवाहन को बताया हैं क्योंकि उनका ही कहना था की शिक्षित हो संगठित रहो और संघर्ष करो इसके माध्यम से आप अपनी पहचान बना सकते हैं सुशीला टाक भौरे ने सुखराम और शेखर जो शहर से बी.ए. करके गाँव वापस आये हुए हैं। वह इन बस्तियों वालों को शिक्षा के बारे में बताते हैं, और डॉ0 अम्बेडकर के विचारों को भी प्रसारित करते हैं जिससे यह जनता अपने अधिकारों के लिए लड़ सके हमारा यह दलित वर्ग जो शोषण का शिकार होता रहा हैं और आज भी कही न कही हो रहा हैं अगर हमें अपने अधिकार अपनी पहचान बनानी हैं। तो शिक्षित होना बहुत जरुरी हैं तथा शिक्षित होने के साथ साथ संगठित रहकर और संघर्ष करके ही हम अपने अधिकार ले सकते हैं और जाति व्यवस्था अंधविश्वास जैसे कुरीतियों से छुटकारा पा सकेंगे। क्योंकि ऊपरी तौर से जाति व्यवस्था हमको खतम होने जैसे लगती हैं लेकिन मानसिक तौर पर लोग आज भी इस वयवस्था को लेकर चल रहे उन लोगों को मानसिक रूप से जाति धर्म , अंधविश्वास को निकलना होगा।

सन्दर्भ ग्रथ सूची

1. कुमार, देवेन्द्र – भारतीय नाट्य साहित्य में दलित चेतना . उत्तर प्रदेश दलित साहित्य विशेषांक सितम्बर अक्टूबर २००२, पृष्ठ न. 49
2. राम, श्री जगजीवन, देश गौरव (अभिनन्दन ग्रन्थ) सम्पादक जी. एस. पथिक, पृष्ठ न. 274
3. भंडारे, डॉ0 मनोहर, दलित साहित्य समग्र परिदृश्य दृ सम्पादक स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ न.256
4. दैनिक पेज – श्री देहरादून ३ जनवरी २००८
5. शरद, सुशीला टाकक्भौरे, नंगा सत्य– प्रकाशन, नागपुर, पृष्ठ 3थर्ड
6. मीनू ,रजत रानी, हिंदी दलित कथा साहित्य अवधारणा और विधाए , अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली,
7. प्रसाद, माता, दलित साहित्य की दशा और दिशा– वाणीप्रकाशन, दिल्ली,

*****